News Broadcasting & Digital Standards Authority
Order No. 147 (2022)

Complainant: Mr. Matin Mujawar
Programme: **DNA, Sudhir Chaudhary के साथ**
Broadcaster: Zee News
Date of Broadcast: 9.2.2022

Since the complainant did not receive a reply from the broadcaster within the stipulated time limit, the complainant escalated the complaint to the second level i.e., NBDSA.

Complaint:

1) Zee न्यूज़ ने कर्नाटका में चल रहे हिजाब के मामले को लेकर "इस्लाम और मुस्लिम समाज पर एक तरफा निशाना थामा. है " जिस तरह से हिजाब विषय को लेकर Zee न्यूज़ ने खबरे चालयी है उसे से Zee न्यूज़ की सनातनी और कट्टर मुस्लिम वरोधी सिद्धांत और विचार साफ़ प्रकट होते है.

2) इस से पहले भी ताल ठोक के स्पेशल एडिशन में **छिपे चेहरे के पीछे आतंक Burka Ban Switzerlnd** इस **प्रोग्राम पर NBDSA ने Zee न्यूज़ के खिलाफ नस्ली एवं धार्मिक सद्भाव को बाधा पहुंचने वाली संवेदनशील, भड़काऊ, शांतता भंग करने वाली खबरे दिखने पर आपत्ति जतायी है उसका ORDER No 118 (2021) है**

3) इसी तरह DNA प्रोग्राम द्वारा नस्ली एवं धार्मिक सद्भाव को बाधा पहुंचने पर "इस्लाम और मुस्लिम समाज को बदनाम करने वाली संवेदनशील, भड़काऊ, शांतता भंग करने वाली खबरे दिखने पर आपत्ति जतायी है उसका आदेश ORDER NO. 115 (2021) है

4) चलायी गई खबरे एक तरफा और बरगलाने वाली, अल्पसंख्यकों को मुजरिम के कटघरे में खड़ा करनेवाली, और देश के नजरो में निचा दिखाने वाली है.

5) खबरे YouTube, Facebook और सोशल मीडिया पर लाखोबार शेर होचुकी है और इनके कमेंट में लोगों ने मुस्लिम समाज के प्रति अपशब्द का इस्तेमाल किया है इस्लाम धर्म प्रति द्वेष निर्माण कर्नेवली भाषा का इस्तेमाल हुआ है.

6) सुधीर चौधरी : जिस बड़े मुद्देपर आप सब को सोचना है वो ये है के अगर इन मुस्लिम छात्रों के हिजाब पहनने के मांग को मानलिया जाता है तो भविष्य में फिर और क्या क्या हो सकता है. इस के बाद स्कूलों में नमाज पड़ने की मांग शुरू होजायेगी, आप को याद होगा कर्नाटक के कोलार में २१ जनवरी को कुछ मुस्लिम छात्रों ने नमाज भी पड़ी थी वो भी एक स्कुल में क्लास रूम में ब्लैक बोर्ड पीछे दिखाई देरहा है और ये छोटे छोटे बच्चे नमाज पढ़ रहे थे लेकिन बाद में जब इस पर विवाद हुआ तो फिर इस नमाज को बंद करवाया गया. **लेकिन हमें लगता है के अगर स्कूलों में हिजाब पहनने की मांग को स्वीकार किया गया तो फिर अगली जो मांग होगी के स्कूलों में नमाज पढ़ने की भी इजाजत दीजिये। कल्पना कीजिये अगर इस मांग को भी मानलिया गया तो फिर क्या होगा तो फिर ये मुस्लिम छात्र स्कूलों में जगह देने की अलग मांग करेंगे और नमाज के दौरान क्लास और पढाई से छूट मांगी जायेगी. कहा जायेगा इस दौरान स्कुल को बंद किया जाए. अगर ये भी होगया तो फिर रविवार के जगह शुक्रवार को जुम्मे के दिन छुट्टी के लिए मोहिम चलायी जायेगी और कहा जाएगा के स्कूलों में फिर शनिवार और रविवार को ही छुट्टी क्यों ? शुक्रवार को होनी चाहिए और ये सिलसिला रुकेगा नहीं ऐसे ही चलता रहेगा स्कूलों में अप्रैल और मई के महीने की जगह रमजान के महीने में छुट्टिया देने के लिए शायद मांग उठने लगेगी। कॉलेज के कैंटीन्स में अलग से हलाल काउंटर लगाने की मांग होगी, पाठ्य क्रम से अलग अलग भगवानो के नाम हटाने की मांग होगी। और मुस्लिम छात्र ये कहेंगे के वो तो अल्लाह को मानते है फिर श्री राम श्री किशन के बारे में जिक्र नहीं होना चाहिये, इस्लाम में इनके बारे मे पढ़ना भी मन है इस लिए ये मत**

सोचिये के ये मामला हिजाब के मांग को मानलेने से समाप्त हो जायेगा। वहा से तो ये मामला शुरू होगा, इस लिए हम कह रहे है ये तो शुरुआत है आगे आगे देखो क्या होता है.

इस समय में Zee न्यूज़ ने देश और दुनियाभर के लोगों को इस्लाम मजहब के प्रति बरगलाया है, भड़काऊ भाषण से मुसलमानो के प्रति गलत संदेश दिया है, नफरत पैदा की है, एक बड़े नरसंहार का षड्यंत्र रचा गया गया है, "ये खबरे नहीं है बल्कि खबरों के नाम पर सरेआम भड़काया जा रहा है, लोगो को चेतावनी दी जा रही है."

7) **Zee** न्यूज़ ने समाचार माध्यम का गलत इस्तेमाल किया है **Zee** न्यूज़ ने रिपोर्टिंग की जगह समाज में अल्पसंख्यकों के प्रति भड़काऊ तथा देश में तनाव भड़काने वाले शब्दों का प्रयोग किया है. **Zee** न्यूज़ समाचार माध्यम का दुरूपयोग हिन्दू मुस्लिम करके नफरत फ़ैलाने तथा देश आगजनी तथा हिंसक वातावरण फ़ैलाने के लिए किया है. यह देशद्रोह का गुन्हा है.

8) Zee न्यूज़ के खिलाफ इस से पहले भी अल्पसंख्यकों प्रति समाज में नफरत फ़ैलाने वाले खबरें और भड़काऊ डिबेट चलाने के विरोध में NBDSA में कई शिकायते दर्ज है

9) **Zee** न्यूज़ राष्ट्र एकात्मता के लिए खतरा है और लगातार इस तरह बताई जाने वाले खबरे देश में अल्पसंख्यको का नरसंहार करने के हेतु से चलायी जा रही है जो एक बहोत गहरी साजिश और मुस्लिम विरोधी अजेंडा है.

10) NBDSA ने Zee न्यूज़ के खिलाफ नस्ली एवं धार्मिक सद्भाव को बाधा पहुंचने वाली संवेदनशील, भड़काऊ, शांतता भंग करने वाली खबरे दिखने पर नाराजगी और ऐतराज जताया है इस तरह के प्रोग्राम दुबारा न दौरये जाए ऐसे बार बार सूचना करने के बावजुद Zee न्यूज़ देश के एकता और अखंडता तो खतरा पंहुचा रहा है और कानून व्यवस्था को चेतावनी देने का लगातार सिलसिला चला रहा है और कानून व्यवस्था को चेतावनी देने का लगातार सिलसिला जारी रखा है.

11) **Zee** न्यूज़ समाचार माध्यम राष्ट्रीय एकात्मता के लिए खतरा है और लगातार इस तरह बताई जाने वाले खबरे देश में अल्पसंख्यको का नरसंहार करने के हेतु से चलायी जा रही है.

The complainant further stated that a news anchor/journalist/presenter should not make any derogatory, derisive or judgemental statements as part of reporting or commenting, but by doing this, the broadcaster had shown its disrespect towards the law and the Constitution of India. The entire news appeared to be the communal intention of the broadcaster and was specially designed to defame Islam Religion and Muslims. Through such statements, the broadcaster has tried to disturb the communal harmony of the state.

Reply dated 27.2.2022 from the broadcaster

The broadcaster stated that the present complaint was not maintainable before the NBDSA since the impugned programme did not violate any of the guidelines and code of ethics/principles of self-regulation. The complainant has miserably failed to state and point out as to which of the guidelines or principles of self-regulation or Code of Ethics had been offended by it in the impugned programme.

The broadcaster stated that the allegations levelled in the subject complaint were completely baseless and motivated as the contents of the impugned programme were not intended to propagate a narrative against any particular religion or community, nor was it telecast with the intention to spread hate or outrage the religious feelings of any particular religion. The reporting in the impugned was also completely balanced, neutral and specific to the issue involved. Therefore, the allegations that

the impugned programme had intended to provoke religious tension were completely false and baseless.

That in the programme 'DNA' it had fairly and objectively reported and conducted a detailed analysis of the recent Hijab Controversy that arose in the State of Karnataka, when various Muslim Girl students raised a demand to allow them to attend classes in Hijab/Burqa, leading to widespread protests by various students and organizations with vested interest all over the country. In the programme, the broadcaster stated that it condemned the actions of all the students, irrespective of their religion, who were giving so much importance to these issues over their education and career. It also fairly and objectively presented the views of protesting Muslim Girls with respect to their demand to withdraw the ban on Burqa/Hijab in schools and colleges. As The reporting was completely free from bias and partiality, and the same was objectively presented in the interest of all the students, irrespective of their religion.

The broadcaster stated that it had in the programme only pointed to a valid topic which concerned the majority of the people being the education of the children. The anchor had focused on how the said controversy was affecting the studies of the children and how the acceptance of the current demand could result in inequality amongst other students. Its objective was to only highlight how the minds of the students had been polluted by certain political leaders and extremist people, so much so that the religious uniform has become a major concern being prioritized over the studies, and if the same continues, then the young children might be used to fulfil the agendas of certain political leaders/ parties.

The broadcaster vehemently denied the allegation that its anchor had spread or even tried to spread hatred against any particular religion in our country or in the world. It stated that from the excerpt shared, it is evident that the anchor neither used any hate language nor did he conspire against any Community in any manner whatsoever. Further, in the programme, the broadcaster stated that it had tried to warn the innocent people, irrespective of their religion, by showing them a bigger picture of how their children have been used by certain political parties/ leaders to serve their motive and agenda. That it was evident that the complainant had very cleverly manipulated the words used by its anchor in the complaint.

The contents of the programme were completely unbiased and impartial, which was evident from the fact that its anchor had shown photographs of the family of the King of Jordan, namely, Abdullah – II, lineage of Prophet Mohammad, who, even after living in a place like Jordan where a majority of the population is Muslim, did not follow the religious dress code of Islam. That its only objective was to show how the same is not being followed by Prophet's own family but is being demanded in schools of our country. In the programme, it had even asked the followers of Islam

in the country whether they wanted to follow a leader like APJ Abdul Kalam or such political leaders who were spreading religious hatred in the schools; whether they wanted to follow Kerala's Governor, who raised his voice during the famous case of Shah Bano against the government or such political leaders who want to break our country in the name of religion. The broadcaster stated that in the programme, it had objectively tried to show the viewers of the country the bigger and clear picture and to decide whether the focus of the children should be on their studies considering the exams are near or should such young children focus on controversies like wearing of hijab/burqua in their classes.

In the programme, it was clarified that the real issues involved were being misinterpreted by various politicians for their vested interest and to create communal disharmony and brotherhood. It was fairly stated that the issue involved here was with respect to the wearing of Hijab in Schools and Colleges and not in the general public. In the programme, it was also clearly stated that no Muslim Girl was prevented from wearing Hijab and further that wearing of Hijab or burqa is their constitutional right. Also, it was informed that the issue involved here was whether a student could attend school in his/her religious dress.

The broadcaster stated that the programme also exposed the hidden agenda of extremist organizations like the Social Democratic Party of India and Campus Front of India, who are inciting innocent students to lead the protest for their vested interest. It also analyzed the fact and raised the question as to how these students were protesting to wear Hijab in schools when Muslim Girls in other countries have been leading the protest and fighting against the wearing of the Hijab/Burqa. Thus, in the programme, the broadcaster stated that it had raised a very pertinent and important question in the interest of the people of all the religions of this country without any bias or impartiality.

The telecast was solely based on the incidents taking place with respect to the burkha controversy and the impact it would have upon the coming generations. The aforesaid programme was in due compliance with the journalistic norms, applicable code of conduct and the relevant guidelines issued by the Hon'ble Authority. The programme was completely impartial, neutral, objective and in no manner was a risk to the country's unity and equality.

In view of the above, the broadcaster stated that since it had abided by the principles of news reporting, broadcasting and journalistic norms and the complainant had failed to establish any deviations therefrom, the complaint against it ought to be dismissed at the outset.

Decision of NBDSA

NBDSA at its meeting held on 31.5.2022, considered the above complaint, the response dated 27.2.2022 received from the broadcaster, the complaint filed with NBDSA and the rejoinder filed by the complainant. NBDSA was of the view that a hearing was necessary to determine whether the broadcaster had violated the Code of Ethics & Broadcasting Standards and the Guidelines issued by NBSA. NBDSA, therefore, decided to call the complainant and the broadcaster for a hearing at the next meeting.

On being served with the notices, the following were present for the hearing on 15.6.2022:

Complainant
Mr. Matin Mujawar

Broadcaster:
Ms. Ritwika Nanda, Advocate
Mr. Piyush Choudhary, Chief Manager, Legal
Ms. Annie, Assistant Manager - Legal
Mr. Anurag Singh – Editorial Representative, ZMCL

Submissions of Complainant:
एक जगह हम अपने बच्चो को स्कूलों में ये प्रार्थना सिखाते है" *"भारत मेरा देश है।समस्त भारतवासी मेरे भाई-बहन है ।मैं अपने देश से प्रेम करता हुँ ।इसकी समृद्ध एवं विविध संस्कृति पर मुझे गर्व है। मैं सदा इसका सुयोग्य अधिकारी बनने का प्रयत्न करता रहूंगा।"* और दूसरी जगह न्यूज़ माध्यम किस तरह से छात्राओं और समाज में नफरत का जहर घोल रहा है इसकी मिसाल ZEE न्यूज़ पेश करता है. इस पुरे समय में चलायी गई खबरे एक तरफा और बरगलाने वाली, अल्पसंख्यकों को मुजरिम के कटघरे में खड़ा करनेवाली, और देश के नजरो में निचा दिखाने वाली है.
"सुधीर चौधरी : जिस बड़े मुद्देपर आप सब को सोचना है वो ये है के अगर इन मुस्लिम छात्रों के हिजाब पहनने के मांग को मानलिया जाता है तो भविष्य में फिर और क्या क्या हो सकता है. इस के बाद स्कूलों में नमाज पड़ने की मांग शुरू होजायेगी, आप को याद होगा कर्नाटक के कोलार में २१ जनवरी को कुछ मुस्लिम छात्रों ने नमाज भी पड़ी थी वो भी एक स्कुल में क्लास रूम में ब्लैक बोर्ड पीछे दिखाई देरहा है और ये छोटे छोटे बच्चे नमाज पढ़ रहे थे लेकिन बाद में जब इस पर विवाद हुआ तो फिर इस नमाज को बंद करवाया गया. लेकिन हमें लगता है के अगर स्कूलों में हिजाब पहनने की मांग को स्वीकार किया गया तो फिर अगली जो मांग होगी के स्कूलों में नमाज पढ़ने की भी इजाजत दीजिये। कल्पना कीजिये अगर इस मांग को भी मानलिया गया तो फिर क्या होगा तो फिर ये मुस्लिम छात्र स्कूलों में जगह देने की अलग मांग करेंगे और नमाज के दौरान क्लास और पढाई से छूट मांगी जायेगी. कहा जायेगा इस दौरान स्कुल को बंद किया जाए. अगर ये भी होगया तो फिर रविवार के जगह शुक्रवार को जुम्मे के दिन छुट्टी के लिए मोहिम चलायी जायेगी और कहा जाएगा के स्कूलों में फिर शनिवार और रविवार को ही छुट्टी क्यों ? शुक्रवार को होनी चाहिए और ये सिलसिला रुकेगा नहीं ऐसे ही चलता रहेगा स्कूलों में अप्रैल और मई के महीने की जगह रमजान के महीने में छुट्टिया देने के लिए शायद मांग उठने लगेगी। कॉलेज के कैंटीन्स में अलग से हलाल काउंटर लगाने की मांग होगी, पाठ्य क्रम से अलग अलग भगवानो के नाम हटाने की मांग होगी। और मुस्लिम छात्र ये कहेंगे के वो तो अल्लाह को मानते है फिर श्री राम श्रीकिशन के बारे में जिक्र नहीं होना चाहिये, इस्लाम में इनके बारे मे पढ़ना भी मन है इस लिए ये मत सोचिये के ये मामला हिजाब के मांग को मानलेने से समाप्त हो जायेगा। वहा से तो ये मामला शुरू होगा, इस लिए हम कह रहे है ये तो शुरुआत है आगे आगे देखो क्या होता है. "

सविधान ने हमे बोलने का स्वतंत्र दिया है पर किसी भी मजहब या व्यक्ति के खिलाफ गलत बयां देने का या नफरत फ़ैलाने का स्वतंत्र नहीं दिया है. न्यूज़ चैनल अपने खबरों द्वारा जजमेंट देकर कोर्ट का काम नहीं कर सकते पर यहाँ सीधे सीधे ZEE न्यूज़ कोर्ट का काम कर के जजमेंट देता हुआ दिखाई देरहा है.
खबरों के द्वारे ZEE न्यूज़ द्वारा अल्पसंख्यक समाज को लक्षित लक्षित किया है और सांप्रदायिक भावनाओं को भड़का रहा था,
ZEE न्यूज़ ने समाचार माद्यम का गलत इस्तेमाल करके इस्लाम और मुस्लिम समुदाय प्रति नफरत और आक्रोश को उत्तेजित किया है यह विषय केवल NBDSA के मानको का उलंघन नहीं करता बल्कि यह विषय IPC की धरा २९८, ५०५(१)(२) के अनुसार करवाई के लिए उत्तरदायी है.
इस तरह के खबरों ZEE न्यूज़ स्वय देश में मुस्लिम समाज के विरोध में जेनोसाइड को प्रोत्साहित किया है. और लगातार करता आया है. खबरों के नाम पर न्यूज़ माध्यम का गलत इस्तेमाल किया जा रहा है जो देश के एकता और अखंडता तो गहरी चोट पहुंचने तथा हिंसा के तरफ लेजानेवाली साजिश का एक महत्वपूर्ण भाग है. ZEE न्यूज़ द्वारा इस्तेमाल की गयी भाषा पत्रकारिता के आचरण और सिद्धांतो के विरुद्ध है नस्ली एवं धार्मिक सद्भाव तथा केबल टेलीविजन नेटवर्क (विनियमन) अधिनियम 1995 की धारा 19 और 20 और टेलीविजन चैनलों नीति निर्देशों के खंड 8 का खंडन करने वाली है.

Submission of Broadcaster:
The broadcaster submitted that the telecast was in relation to Hijab Controversy, wherein various Muslim Girl students had raised a demand to allow them to attend classes wearing Hijab/Burqa. The entire reporting was completely free from bias and partiality, and the telecast was solely based on the incidents taking place with respect to the 'Hijab Row controversy' and the impact it will have upon the coming generations.

In the light of the aforesaid, the broadcaster submitted that it had in the impugned programme fairly and objectively reported and conducted a detailed analysis of the recent Hijab Controversy that arose in the State of Karnataka. They have also presented the views of protesting Muslim Girls with respect to their demand to withdraw the ban on Burqa/Hijab in schools and colleges.

The broadcaster submitted that the complainant has miserably failed to state and point out as to which of the guidelines or principles of self-regulation or Code of Ethics has been offended by the broadcaster in its impugned programme. The complainant has mainly raised and pointed out the following allegations/violations:

a. That the broadcaster has targeted Muslims by displaying pictures of Hijab-wearing girls in its show and that the demand of the protesting girls was compared with Covid – 19.

b. That the anchor had accused the girl in Hijab chanting the '*allah hu-akbar*' responsible for the conflict that happened in the government school in Karnataka.

That in reply to the aforesaid allegations, it is stated that the reporting, impugned herein, was completely balanced and neutral. In the programme, it had presented the news and displayed the pictures in the most balanced manner without having any

intention to target any community or religion. It had also focused on how the said controversy is affecting the studies of the children who otherwise have already suffered two years of loss of studies due to Covid– 19, wherein the schools were closed.

That the said video was widely circulated and has led to people from other countries question the education system of our country and the same was reported by it as is, without any manipulations or additions. It had shown the entire video wherein the boys in saffron stole continue chanting '*jai shree ram*' and have shown our concern on the danger the said video clipping would cause in the western media. It is evident that the words of the anchor have very cleverly been manipulated.

In the programme, it had fairly presented how innocent students are being dragged into the dearth of religious fights at such a young age where their only focus should be their careers, irrespective of the religion they are coming from. Further, it had also read out an Order from the Court which gave private institutions the right to have their own dress code and thereby, it had in the programme only emphasized the importance of equality among all students coming to the school to study as vested upon the citizens of our country by the Constitution of India.

That the telecast was solely based on the incidents taking place with respect to the Hijab Row controversy and the impact it will have upon the coming generations, the aforesaid programme was in due compliance with the journalistic norms, applicable code of conduct and the relevant guidelines issued by this Hon'ble Authority.

Thus, in view of the aforesaid, the broadcaster submitted that the impugned programme is in conformity with the Code of Ethics and has nowhere breached any of the *Principles of Self-regulation and Fundamental Principals*. Therefore, it is requested that this Hon'ble Authority may be pleased to dismiss the present Complaint.

Decision

NBDSA went through the complaint, response from the broadcaster and also gave due consideration to the arguments of the complainant and the broadcaster and reviewed the footage of the broadcast.

The Authority observed that while broadcasting a programme on any subject, there can be various views. However, the presenter must adhere to the Code of Ethics & Broadcasting Standards (Code of Ethics) and follow the principles of objectivity.

While there was no problem with regard to the subject of the programme, however, there was no reason to extend the narrative to stating *'जिस बड़े मुद्देपर आप सब को सोचना है वो ये है के अगर इन मुस्लिम छात्रों के हिजाब पहनने के मांग को मानलिया जाता है तो भविष्य में फिर और क्या क्या हो सकता है. इस के बाद स्कूलों में नमाज पड़ने की मांग शुरू होजायेगी, आप को याद होगा कर्नाटक के कोलार में २१ जनवरी को कुछ*

मुस्लिम छात्रों ने नमाज भी पड़ी थी वो भी एक स्कुल में क्लास रूम में ब्लैक बोर्ड पीछे दिखाई देरहा है और ये छोटे छोटे बच्चे नमाज पढ़ रहे थे लेकिन बाद में जब इस पर विवाद हुआ तो फिर इस नमाज को बंद करवाया गया. लेकिन हमें लगता है के अगर स्कूलों में हिजाब पहनने की मांग को स्वीकार किया गया तो फिर अगली जो मांग होगी के स्कूलों में नमाज पढ़ने की भी इजाजत दीजिये। कल्पना कीजिये अगर इस मांग को भी मानलिया गया तो फिर क्या होगा तो फिर ये मुस्लिम छात्र स्कूलों में जगह देने की अलग मांग करेंगे और नमाज के दौरान क्लास और पढाई से छूट मांगी जायेगी. कहा जायेगा इस दौरान स्कुल को बंद किया जाए. अगर ये भी होगया तो फिर रविवार के जगह शुक्रवार को जुम्मे के दिन छुट्टी के लिए मोहिम चलायी जायेगी और कहा जाएगा के स्कूलों में फिर शनिवार और रविवार को ही छुट्टी क्यों ? शुक्रवार को होनी चाहिए और ये सिलसिला रुकेगा नहीं ऐसे ही चलता रहेगा स्कूलों में अप्रैल और मई के महीने की जगह रमजान के महीने में छुट्टिया देने के लिए शायद मांग उठने लगेगी। कॉलेज के कैंटीन्स में अलग से हलाल काउंटर लगाने की मांग होगी, पाठ्य क्रम से अलग अलग भगवानो के नाम हटाने की मांग होगी। और मुस्लिम छात्र ये कहेंगे के वो तो अल्लाह को मानते है फिर श्री राम श्रीकिशन के बारे में जिक्र नहीं होना चाहिये, इस्लाम में इनके बारे मे पढ़ना भी मन है इस लिए ये मत सोचिये के ये मामला हिजाब के मांग को मानलेने से समाप्त हो जायेगा। वहा से तो ये मामला शुरू होगा, इस लिए हम कह रहे है ये तो शुरुआत है आगे आगे देखो क्या होता है". This portion of the discussion was avoidable. No doubt, in a programme like this which is analysis of the news, the anchor can express his/her views so long as the statements adhere to the Code of Ethics. However, when the aforesaid assertions are viewed contextually and in entirety keeping in view the tenor and the slant which is given to the statements, NBDSA finds that the manner in which the narrative was expressed, it lacked probity and the presenter could have eschewed the same. In view of the above, the Authority found that the programme had violated the principles of Impartiality and Objectivity as enshrined in the Code of Ethics.

NBDSA, therefore, disapproves the aforesaid narrative and cautions the channel to be careful in future.

In view of the above, NBDSA, therefore, directed that the video of the said broadcast, if still available on the website of the channel, or YouTube, or any other links, should be removed immediately, and the same should be confirmed to NBDSA in writing within 7 days.

NBDSA decided to close the complaint with the above observations and inform the complainant and the broadcaster accordingly.

NBDSA directs NBDA to send:
(a) A copy of this Order to the complainant and the broadcaster;
(b) Circulate this Order to all Members, Editors & Legal Heads of NBDA;
(c) Host this Order on its website and include it in its next Annual Report and
(d) Release the Order to media.

It is clarified that any statement made by the parties in the proceedings before NBDSA while responding to the complaint and putting forth their view points, and any finding or observation by NBDSA in regard to the broadcasts, in its proceedings or in this Order, are only in the context of an examination as to whether there are any violations of any broadcasting standards and guidelines. They are not intended to be 'admissions' by the broadcaster, nor intended to be 'findings' by NBDSA in regard to any civil/criminal liability.

Sd/-

Justice A.K Sikri (Retd.)
Chairperson

Place: New Delhi
Date : 23.07.2022